Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 2, Issue 1 - 2019

जनसंचार माध्यमों का प्रभाव

डॉ. कैलाश पारीक*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में संचार प्रधान समाज में हम बिना जनसंचार माध्यमों के जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। हमारे दैनिक जीवन में संचार माध्यमों का जबरदस्त प्रभाव है। सुबह अखबार से लेकर रात तक किसी न किसी रूप में संचार माध्यमों से सामना होता रहता है। आज की युवा पीढी समाचारों और सूचनाओं के आदान प्रदान के लिए, टिकट बुक कराने और टेलीफोन का बिल जमा कराने के लिए इंटरनेट का उपयोग करने लगी है। खरीद फरोख्त के हमारे फैसलो तक पर विज्ञापनों का असर साफ देखा जा सकता है। यहा तक कि षादी ब्याह के लिए भी लोगों की अखबर या इंटरनेट के मैटिमोनियल पर निर्भरता बढने लगी है।

आज राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर राजनीति एवं अर्थनीति तक जनसंचार के माध्यमों से प्रभावित होती है। वे न सिर्फ सरकार के कामकाज की निगरानी करते है। बल्कि सरकार के गलत फैसलों के खिलाफ आवाज भी उठाते है।

धर्म, अध्यात्म यहां तक की अपनी सेहत तक के बारे में जानकारी जनसंचार माध्यमों से ले रहे है। इसमें कोई दोराय नहीं है कि जनसंचार माध्यमों ने हमारे जीवन को और ज्यादा सरल और अधिक सक्रिय, समर्थ बनाया है। जनसंचार माध्यम आज एक उत्पाद की रूप में हमारे घरों तक आ गए है। हमारे सामाजिक, आर्थिक जीवन को को गतिषील और पारदर्षी बनाया है। वे हमारी जीवनशैली को प्रभावित कर रहें है और हम उन्हे चाहते हुए भी रोक नहीं सकते। सूचनाओं और जानकारियों के आदान प्रदान से लेकर लोगों को एक दूसरे जोडने तक और बहस तथा विचार विमर्श से लेकर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत बनाने तक में जनसंचार माध्यमों की महत्त्पूर्ण भूमिका है।

जनसंचार माध्यम खतरे और संभावनाए

आधुनिकीकरण और सामाजिक विकास के सदर्भ में यदि संचार प्रकारों पर विचार करें तो इस क्षेत्र में कई संभावनाए स्पष्ट होती दिखाई दे रही है। संचार साधनों कों उचित दिशा देकर नए मूल्य प्रतिष्ठित कराए जा सकते है। संचार वस्तुत दुधारी अस्त्र है। जिसका उपयोग बडी ही सावधानी से होना चाहिए।

जनसंचार के साधन उनके सम्मुख नए जीवन का एक आकर्षक विकल्प प्रस्तुत कर उन्हे जड़ता का मार्ग छोड़ कर सक्रियता की राह की ओर अग्रसर कर सकते है। समाज को परंपरा से प्रगति की ओर मोड़ा जा सकता है। जन मानस को आधुनिकीकरण के लक्ष्यों और कार्यक्रमों को स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। विभिन्न साधनों की सहायता से मनोरंजन के साथ साथ विकास का संदेष सार्थक ढंग से जनमानस तक पहुचाया जा सकता है। इन प्रभावशाली संभावनाओं के साथ संचार की सीमाओं पर ध्यान रखना भी

*सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, आई.ए.एस.ई, मानित विश्वविद्यालय, सरदारशहर।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

आवश्यक है। संचार एक प्रकार का अस्त्र है। उसका सदुप्रयोग भी हो सकता है और दुरूपयोग भी। मूल प्रश्न है यह अस्त्र किसके हाथ में है। क्या उनमें इन साधनों का कल्पनाषील और सार्थक उपयोग करने की कितनी क्षमता है। दूसरे शब्दों में इन साधनों का उपयोग कौन किस उदश्य से और कितनी क्षमता से कर रहा है। एक हाथ में यदि संचार प्रगति का प्रेरक बन सकता है। तो दूसरे हाथ उसे परंपरा का पोषक बना सकते है। कभी कभी संचार प्रगति का स्थान ले लेता है।

वास्तविक प्रगति कम होती है पर उसे और काल्पनिक प्रगति को संचार के साधन इतने आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि जनता षब्दों के मोहक मायाजाल में दिशा भ्रमित हो जाती है। जनसंचार माध्यमों के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी है। देश का ध्यान महत्त्वपूर्ण समस्याओं से हटाकर अर्थहीन प्रश्नों में उलझाए रखने के लिए भी किया जा सकता है। अगर सावधानी से इस्तेमाल न किया जाय तो लोगों पर अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव भी डालता है। आजकल की सिनेमा और टी वी जैसे जनसंचार माध्यम काल्पनिक और लुभावनी कथाओं के जरिये लोगों को एक बनावटी दुनिया में पहुंचा देते है। जिसका वास्तविक जीवन से कोई संबंध नहीं होता है। इस कारण लोग उसके वैसे ही आदी हो जाते हैं जैसे किसी मादक पदार्थ के। नतीजा यह होता है कि वे अपनी वास्तविक समस्याओं का सामधान काल्पनिक दुनिया में ढुढंने लगते हैं। फलस्वरूप लोगों में पलायनवादी प्रवृत्ति पैदा होती है।

जनसंचार माध्यमों के प्रभाव को लेकर कुछ धारणाए इस प्रकार हैं जनसंचार माध्यम लोगों के व्यवहार और आदतों में परिवर्तन के बाजाए उनमें थोडा बहुत फेरबदल और उन्हें और ज्यादा मजबूत करने काम करते है। जनसंचार माध्यमों में सिनेमा पर यह आरोप भी लगता रहा है कि उन्होंने समाज में हिंसा अश्लीलता और असामाजिक व्यवहार प्रोत्साहित करने में सबसे अग्रणी भुमिका निभाई हैं हालाकि विषेशज्ञों का यह मानना है कि जनसंचार माध्यमों का लोगों पर उपना वास्तविक प्रभाव नहीं पडता जितना उसके बारे में समझा जाता है। इसी तरह यह माना जाता है कि जनसंचार माध्यमों का उन लोगों पर अधिक प्रभाव पडता हैं जो किसी चीज के प्रति प्रतिबद्ध नहीं है या अनिश्चय में है। जनसंचार माध्यमों को प्रभाव तब और अधिक बढ जाता है। जब लगभग सारे माध्यम एक ही समय में एक ही बात कहने लगते है। साथ ही जब वे कई मुदों के बजाय किसी एक मुदे को बहुत अधिक उछालने लगते है और बार बार उन्हीं सदेशों छवियों विचारों को दोहराते लगते है तब भी उनका गहरा प्रभाव पडता है।

हम देखते है कि अखबारों और टेलीविजन चैनलों में किसी खास खबर या मुद्दे को जरूरत से ज्यादा उछाला जाता है जबकि कुछ अन्य मुदों और खबरों को बिलकुल जगह नहीं दी जाती है। प्रायः यह देखा गया है कि उन सवालों को अधिक प्रसारित किया जाता है। जिनसें समाज के ताकतवर वर्गों के हित जुडें हुए हैं या जो किसी न किसी रूप में आवश्यक हैं इसके साथ ही अकसर उन मुदों सवालों को नजरअदाज किया जाता है जिनका संबंध व्यापक जनसमुदाय खासकर समाज के कमजोर वर्गो से होता हैं।

एक महत्वपूर्ण सवाल यह है कि जनसंचार माध्यमों पर किसका नियंत्रण है। सवाल इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि जनसंचार माध्यमों का संबंध सार्वजनिक हित से जुडा हुआ है। उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे सार्वजनिक हित को आगे बढाएगें लेकिन यह एक तथ्य है कि अधिकाष जनसंचार माध्यमों पर कंपनियों या समाज के उन व्यक्तियों का स्वामित्व है जो किसी राजनीतिक पार्टी अथवा अन्य रसुखदार से सम्बंध रखते है। वे उन्हें सार्वजनिक हित से ज्यादा

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

अपने व्यावसायिक मुनाफे को ध्यान में रखकर उपयोग करते है। इसका सीधा असर जनसंचार माध्यम की अंतरवस्तू पर पडता है। इस कड़ी में वे विज्ञापनदाताओं के हितों को प्राथमिकता देते है। इसके लिए तथ्यों को तोड–मरोड कर प्रस्तुत किया जाता है अथवा सचाई को छुपाने की कोशिश की जाती है।

जनसंचार माध्यमों (मीडिया) के जरिये लोगों को एक खास तरह की जीवनशैली में भी ढालने की कोशिश की जाती है। बहुतेरे विश्लेषकों का मानना है कि उपभोक्तावाद के विकास और फैलाव में जनसंचार माध्यमों की सबसे महत्त्वपूर्ण भुमिका निभाई है। फैशन से लेकर खानपान तक में लोगों की रूचियों और आदतों को बदलने में जनसंचार माध्यमों के जरिये पेश की जा रही आधुनिक उपभोक्तावादी जावनशैली का गहरा प्रभाव पड रहा है।

सारांष के रूप में यह कहा जा सकता है कि जनसंचार माध्यमों ने जहां एक तरफ लोगों को सचेत और जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाई है वहीं दूसरी ओर उसके नकारात्मक प्रभावों से भी इनकार नही किया जा सकता है। साथ ही साथ यह भी स्पष्ट हो जाता है कि जनसंचार माध्यमों के बिना आज सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। एक जागरूक पाठक, दर्शक और श्रोता के रूप में हम अपनी आखें, कान और दिमाग हमशा खुले रखे। ऐसे में यह जरूरी भी है कि हम जनसंचार माध्यमों में परोसी जाने वाली सामग्री को निष्क्रिय तरीके से ग्रहण करने की बजाए उसे सक्रिय तरीके से सोच विचार करके और गहन आलोचनात्मक विश्लेषण करने के बाद ही उसे स्वीकार करें।

सन्दर्भ सूची

1. संचार माध्यम, खंड 29.
2. इन्टरनेट hindi.webdunia.com/hindi-essay/social-media-essay.
3. https://study.com/.../what-is-mass-communication-definition.
4. अभिव्यक्ति एवं जनसंचार माध्यम, मा.शि.बो.
5. प्रों श्यामाचरण दुबे के भाषण पर आधारित पुस्तिका संचार और विकास प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय नयी दिल्ली से साभार।
6. विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.